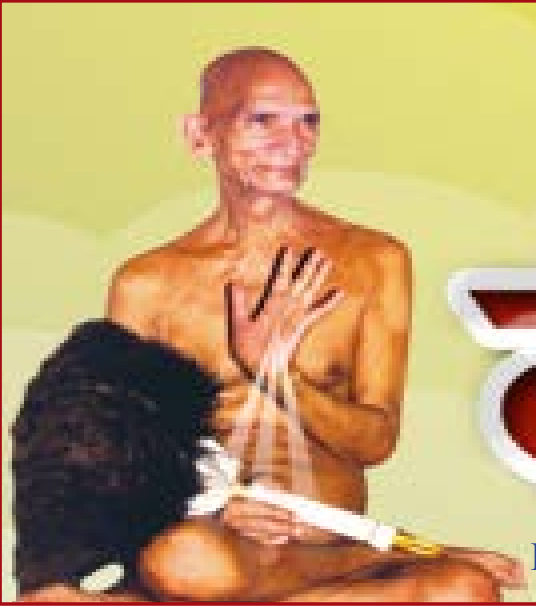

Issue: 147
02 Sept. 2020
www.jainachar.com
जैनाचार
Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

cã dgh lek;k gS e>eS Hkh----

खुद से बात करता हूं, खुद से ही मुलाकात करता हूं,
ब्रह्म कई समाया है मुझ में भी, इसलिए खुद में ही ब्रह्म की तलाश करता हूं।

आत्माथीयो! अनादि काल से अब्रहम चला आ रहा है। चाहे वह निर्भय हो चाहे वह पेड़ पौधे हो। जगदीशचंद्र ने यह सिद्ध किया कि पेड़ पौधे में भी अब्रहम हैं यह बात भगवान महावीर स्वामी ने 2550 वर्ष पहले बताई थी। एक इंद्रियों में अग्नि का क्रोध देखा कि ऑस्ट्रेलिया का पूरा जंगल जल गया। वायु का क्रोध गांव की गांव उजड़ जाते हैं जब पृथ्वी को क्रोध आता है तो भूकंप जैसी दुर्घटना होती है। पेड़ पर एक बेल दूसरी बेल पर लगे हुए हैं, पंचेंद्रीय कुत्ते बेल गाय भैंस मुर्गा इन सब को हम देख रहे हैं वे सब अब्रहम झूल रहे हैं।

मनुष्य भव में ब्रह्मचार्य लिया जाता है। वह–भव भव के संक्रमण तोड़ने के लिए है इस मनुष्य भव् को पाकर गट आप जाल बुनते बैठते हो विकल्पों के जाल बुन रहे हो तो उन्होंने मकड़ी की पर्याय को आमंत्रण दे दिया है या न समझो, मत फिसलों उपर की चिकनाई पर, चांदी का वर्क हे गोबर की मिठाई पर। ज्ञानियों संसारी जीवो को देखकर विचार आए की जी शरीर मैं नव मल द्वार बातें हैं। उस शरीर के ऊपर जो चिकनी चमड़ी उसको देख कर रिजो मत उस रक्त पीप को बोलिए मत बाहर दृष्टि ही नहीं जाना स्वरूप में लीन रहने का नाम ब्रह्मचर्य है।

त्रिलोक पूजनीय है ब्रह्मचर्य व्रत है। माताओं आपका कर्तव्य है कि आप अपने प्रज्ञा से शील की सुरक्षा कीजिए जिस चाहे को हपस तिपमदक बनाते हो। उच्च कुल की छोरियां नीच कुल के छोरे से शादी का प्रस्ताव रख रहे हो, जानबूझकर ऐसे गलत कार्य मत करिए नहीं तो कुएं में गिर ना जैसा होगा। बड़े पुण्य से हमें यह उच्च कुल मिला है, इसके ऊपर लांछन मत लगने देना अगर अब विवेक से कार्य करने लगोगे तो उलझ जाओगे और उलझ गए तो सुलझाना मुश्किल होगा।

युवाओं मन वचन काय से अपनी शील की सुरक्षा करो। युवा और युवतीयो को अपने विशमलिंगीयो से दूर रख कर अपनी व्रत की साधना करना चाहिए। ब्रह्मचार्य की साधना करने से अपनी शक्ति और आयु बल वृद्धि बढ़ती है। मनुष्य को कम से कम वर्ष में एक बार नहीं तो 1 माह में एक बार अब्रहम करना चाहिए, जिससे आपके वीर्य की सुरक्षा बनी रहे। आप में अनंत शक्ति है वह शक्ति को पहचान कर मनुष्य भव के एक–एक सांसे कि कीमत कीजिए। इसी मंगलमय भावना के साथ...

जय बोलो उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की जय

तपस्या करने वाले सभी तपस्वीयों की सुख साता पूछते हुए खुब खूब अनुमोदना

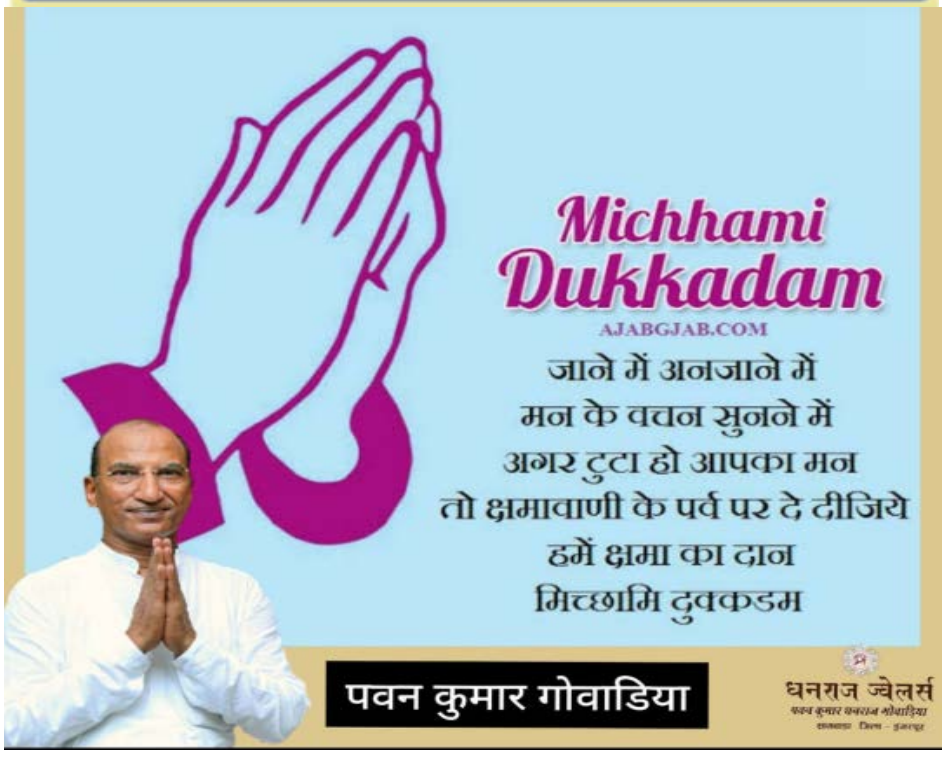

food Kku :ih u=kas ls vkRek dks tkuus dk ç;kl djs gS

cã] vkRek esa je.k djuk cãpp; gS

vkRek] vkRek esa fLFkj gksuk iT;rk dks çkIr gksuk mÙke cãp;Z gS

vkpk;Z Jh o)Zeku lkxj th egkjkt

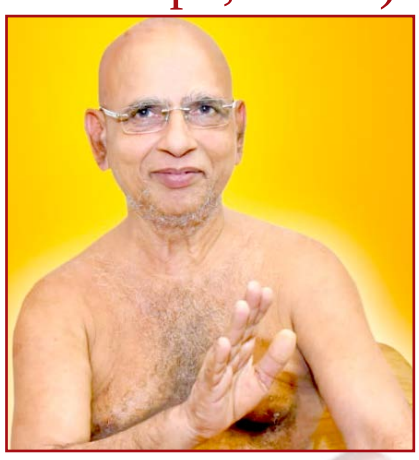

पर्यूषण पर्व 10 लक्षण पर्व में प्रतिदिन 1 सीढ़ी चढ़ते चढ़ते अंतिम सीढ़ी ब्रह्मचर्य व्रत पर आ गए।

यह सीढी बहुत महत्वपूर्ण है 10 दिनों से जिस बात का उपदेश दिया जा रहा था वह विभाव परिणीति का आत्मा से हटना अब 9 दिनों में विभव परिणीति आत्मा से हट रही है। आत्मा अपने निज स्वभाव को प्राप्त कर रही है तो अब आत्मा के अलावा कुछ शेष नहीं बचा। प्रवचन में बताया था कि आत्मा अकेली है, मैं अकेला हूं, कोई आत्मा किसी के साथ संबंध नहीं रखती पर सबका स्वरूप एक जैसा है। सब में ज्ञान दर्शन चेतना सबके पास है। ज्ञान दर्शन चेतना से ही उत्तम ब्रह्मचर्य प्राप्त होता है, हर मानव अच्छी या बुरी संगति अपनी इच्छा अनुसार रखते हैं और इसी कारण संसार के परिभ्रमण का अंत नहीं होता है। ब्रह्मचर्य का अर्थ आत्मा का आत्मा में स्थिर होना ब्रह्मचर्य है। हम विषय कसाय के कारण आत्म स्वरूप को भूलकर संसार में कष्ट पा रहे हैं इसी कारण करोड़ों भव में दुख पाया है। स्वभाव में स्थित होना अनंत सुख का कारण है जो स्वभाव में स्थित है वह मस्तक पर विराजित है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी बताते हैं अरिहंत भगवान सिद्ध भगवान परमेष्ठी अपने स्वभाव में स्थित हो गए हैं इसलिए वह पूजनीय है और पूज्यता को प्राप्त हुए हैं। शीलरूपी रत्न की विवेचना करते हुए आचार्य श्री ने बताया कि शील एक रत्न के समान है। जिस प्रकार रत्न कीमती वस्तु को हम खुले चौराहे पर छोड़ नहीं सकते, इसे एक डिब्बी, उसे दूसरी डिब्बी फिर तीसरी डिब्बी, उसे तिजोरी में रखते हैं अर्थात रत्न कि हम बहुत सुरक्षा विभिन्न प्रकार से करते हैं। इसी प्रकार शील की रक्षा करने के लिए भी शास्त्रों में 9 प्रकार की बाढ़ रोक अनेक का उल्लेख किया गया है।

व्यहार की बात है कि हम 9 तरह से शील की रक्षा करें और निश्चय की दृष्टि से अगर देखें तो आत्मा का आत्मा में स्थिर होना ही ब्रह्मचर्य व्रत है। ब्रह्मचर्य व्रत में आत्मा में डुबकी लगाना तब हमें ब्रह्म मिलेगा यह अंतिम अंग है आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने प्रवचन में बताया। 24 तीर्थंकर में 5 तीर्थंकर बाल ब्रह्मचारी हैं जो अपने आत्म स्वरूप में स्थिर होकर आराध्य बने है।

आचार्य श्री ने बताया कि बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी हुए। जिनका 9 वर्ष की उम्र में 6 वर्ष की कन्या के साथ विवाह संबंध तय निश्चित हुआ। श्री सातगोड़ा जी ने यौवन अवस्था में मुनि श्री सिद्ध सागर जी से अपने शील ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया। ब्रह्मचर्य व्रत लेकर नियमों से अपने शरीर की शील की रक्षा हमारे पास है। हमारे स्वभाव में है हमें भीतर देखना होगा हमें ज्ञान और विवेक से आत्मा का स्वरूप दिखेगा। विवेक नही होने के कारण हम संसार में भ्रमण कर रहे हैं। आचार्य श्री ने एक सूत्र दिया कि विवेक रूपी नेत्र से हम अपने स्वरूप को जान सकते हैं।

आचार्य श्री ने अनेक कथानक का ज़िक किया, जिसमें ब्रह्मचर्य व्रत में पालन में जिनदत्त ओर जिनदता सेठ सेठानी है, जिसमे पुरुष ने विवाह के पूर्व शुक्ल पक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत तथा लड़की ने विवाह के पूर्व कृष्णपक्ष में ब्रह्मचर्य व्रत का नियम लिया था। संयोग से दोनों का आपस में विवाह होता है और वह दोनों अखंड ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते है एक राजपुत्री को कुष्ट रोग होने पर मुनिराज ने उपचार बताया कि इस असिधारा व्रत धारी दंपति के स्पर्श का जल छिड़कने से कुष्ट रोग दूर होगा। उस राजपुत्री का कुष्ठ रोग जल से ठीक हुआ बाद में दोनों ने दीक्षा धारण की यह है ब्रह्मचर्य व्रत का प्रभाव।

वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी को नमोस्तु

राजेश पंचोलिया इंदौर, वात्सल्य वारिधि भक्त परिवार

घर घर मंदिर...घर घर भगवान...